श्री नित्येश्वर आश्रम मे आयोजित पुस्तक लोकार्पण समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–27.03.2017, समय–11:00 बजे, स्थान–नित्येश्वर आश्रम, कानपुर)

श्री नित्येश्वर आश्रम में आयोजित पुस्तक लोकार्पण–समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित स्वामी योगेन्द्र मुनि जी, श्री सुनील सेठ जी, श्री संजीव सेठ जी, आमंत्रित अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

ब्रह्मलीन स्वामी श्री सूरज मुनि जी महाराज को मैं अपनी भावांजलि अर्पित करता हूँ। इस कार्यक्रम के बाद मैं स्वामी सूरज मुनि जी की समाधि पर जाकर अपने श्रद्धा–सुमन भी अर्पित करूँगा। आप सभी अवगत हैं कि स्वामी सूरज जी महाराज बाल्य–काल से ही गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी होकर हिमालय की गोद में रहने लगे तथा करीब 10 वर्षों तक भोजन त्याग कर कंदमूल खाते रहे और तपस्वी बने रहे। फिर 10 वर्षों तक गंगा जी के बीचों–बीच कुटिया बनाकर रहना और नित्य गंगा स्नान करना और नित्य बालू से शिवलिंग बनाना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया था। वे करीब 5 फुट का शिवलिंग तैयार करते थे और आरती एवं भोग प्रसाद बँटवाते थे। वे नित्य यह कार्य करते थे, इसलिए उन्हें 'नित्येश्वर महाराज' कहा जाता था।

नित्येश्वर आश्रम पहुँचकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। पूर्व में भी कई बार मुझे यहाँ आने का सौभाग्य मिला है। स्व॰ पूरन सेठ जी के साथ भी मुझे यहाँ आने का अवसर मिला है। मैं आज उनकी पुण्य–स्मृति को भी नमन करता हूँ। मेरी सांसद निधि से भी यहाँ कुछ निर्माण कार्य पूर्व में हुए हैं।

कुछ भक्त, जो फत्तेपुर के जमींदार थे, उन्होंने नित्येश्वर महाराज जी को 10 बीघा जमीन दान में दी थी। इसी को महाराज जी ने विकसित कर हरा–भरा और रमणीय बना दिया। इसी स्थल पर उन्होंने पक्की कुटिया, पक्का भोजनालय

और पक्की गौशाला स्थापित करायी। वे नित्य भण्डार–गृह से प्रतिदिन 100 साधु–सन्तों एवं भक्तों को भोजन कराते थे। नित्येश्वर बाबा का जीवन परहित और परोपकार पर केन्द्रित था। हमारी भारतीय संस्कृति में परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य और परपीड़ा को सबसे बड़ा अधम अर्थात् पाप कहा गया है। तुलसीदास जी भी कहते हैं कि –''परहित सरिस धरम नहिं भाई।'' नित्येश्वर बाबा पर आज लोकार्पित हुई किताब में उनके जीवन के इन्हीं दिव्य पक्षों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे मानवता को असीम प्रेरणा मिलती है। समाज के अभिवंचित वर्ग के कल्याण के लिए कार्य करना हम सबका परम कर्त्तव्य है। नित्येश्वर बाबा के जीवन और संदेशों से प्रेरणा ग्रहण कर हमें देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता, अहिंसा, सद्भावना तथा शांति के लिए दृढ़संकल्पित होना चाहिए।

नित्येश्वर बाबा बहुत कुछ व्यवस्थित करके ब्रह्मलीन हुए। आज आश्रम का कार्यभार स्वामी योगेन्द्र मुनि जी संभाल रहे हैं। मुझे विश्वास है कि स्वामी योगेन्द्र मुनि जी, स्वामी सूरज मुनि के सपनों को साकार करने की दिशा में सदैव तत्पर रहेंगे। आश्रम के सफल संचालन तथा नित्येश्वर बाबा के समस्त अनुयायियों को मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएँ। आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।